www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
शनिवार 21 सितंबर 2019

दैनिक जागरण

जो ऊंची छलांग लगाना चाहता है, उसे लंबा दौड़ना होगा

एक बड़ा फैसला

मंदी के माहौल को दूर करने के लिए कॉरपोरेट टैक्स घटाने के वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के फैसले पर उद्योग जगत से लेकर शेयर बाजार ने जैसी उत्साहजनक प्रतिक्रिया व्यक्त की उससे यह अपने आप साबित हो जाता है कि व्यापक असर वाला एक बड़ा कदम उठा लिया गया है। यह फैसला भारतीय उद्योग जगत के साथ वैश्विक कारोबारियों को भी आकर्षित करने वाला तो है ही, आर्थिक सुस्ती को दूर करने और साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रति सकारात्मक सोच का संचार करने वाला भी है। इस फैसले के तहत कॉरपोरेट टैक्स 30 फीसदी से घटाकर 22 फीसदी कर दिया गया है। इसके साथ ही मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर की नई कंपनियों के लिए टैक्स 25 फीसदी से घटाकर 15 फीसदी कर दिया गया है। करीब-करीब सभी यह मान रहे हैं कि इस बड़े फैसले के अपेक्षित परिणाम सामने आएंगे, लेकिन यह सरकार के साथ उद्योग जगत को भी सुनिश्चित करना चाहिए कि ऐसा वास्तव में हो और उसका लाभ आम आदमी को रोजगार के बढ़ते अवसरों के रूप में मिले। अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए यह आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है कि उद्योग-धंधों की बढ़त के साथ ही रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न हों। इससे ही मांग बढ़ेगी और अर्थव्यवस्था गति पकड़ेगी।

उद्योग जगत एक अर्से से कॉरपोरेट टैक्स में कमी की मांग कर रहा था ताकि वह वैश्विक प्रतिस्पर्द्धा का सामना कर सके, लेकिन यह मांग पूरी करने के बजाय इस वर्ष आम बजट में ऐसे प्रावधान कर दिए गए जिससे कारोबारी हतोत्साहित हुए। शायद इसी कारण वित्त मंत्री के फैसले को भूल सुधार की संज्ञा देने के साथ ही यह भी कहा जा रहा है कि अपने देश में मुश्किल वक्त में ही बड़े कदम उठाए जाते हैं। यह जरूरी है कि मुश्किल वक्त की आहट समय रहते महसूस की जाए। कॉरपोरेट टैक्स घटाने के फैसले का एक पहलू यह भी है कि इससे सरकारी खजाने में करीब डेढ़ लाख करोड़ रुपये की कमी आएगी। चूंकि जीएसटी के जरिये अपेक्षित राजस्व की प्राप्ति नहीं हो पा रही है इसलिए सरकार को इसकी चिंता करनी होगी कि उसे आवश्यक धन की प्राप्ति कहां से हो? यह सही समय है कि सरकार विनिवेश प्रक्रिया को गति प्रदान करे। जब सैद्धांतिक तौर पर यह मान लिया गया है कि सरकार का काम उद्योग-धंधे चलाना नहीं तब फिर सार्वजनिक उपक्रमों के विनिवेश की दिशा में आगे बढ़ा ही जाना चाहिए। इसके साथ ही एक अर्से से लंबित पड़े श्रम सुधारों और औद्योगिक विवाद से जुड़े जटिल कानूनों की भी सुध ली जानी चाहिए। यह सब करके ही कारोबारी माहौल को सचमुच सुगम बनाने में सहूलियत मिलेगी।

योजनाओं में बढ़े भागीदारी

वैसे तो सरकार की कल्याणकारी योजनाओं में बिहार के किसानों की भागीदारी कभी बढ़-चढ़ कर नहीं दिखी, लेकिन प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना की रिपोर्ट इससे इतर है। इस योजना में यहां के किसानों ने यूपी को भी पीछे छोड़ दिया है। भागीदारी में हरियाणा के बाद फिलहाल बिहार के किसान दूसरे स्थान पर हैं। यह उनकी सुरक्षित और सुगम जीवन के प्रति सकारात्मक सोच को इंगित करता है। जरूरत है सक्रियता और सतर्कता के साथ मुकाम को हासिल करना। खासकर वैसे किसानों के लिए इस योजना में भागीदारी ज्यादा अहम है, जिनका खेती-बाड़ी के अलावा आय का कोई दूसरा स्रोत नहीं है। दो हेक्टेयर की जोत वाले वैसे किसान जिनकी उम्र 18 से 40 वर्ष की हो, मामूली अंशदान कर इस पेंशन योजना को उम्र के अंतिम पड़ाव में गुजर-बसर का आधार बना सकते हैं। यदि दो हेक्टेयर की खेती को संवारा जाए तो 55 से 220 रुपये का मासिक अंशदान बड़ी रकम नहीं कही जाएगी। यही अंशदान योजना के भागीदार को 60 की उम्र के बाद प्रतिमाह पेंशन के रूप में तीन हजार रुपये की मदद करेगा। अंशदान की उम्र सीमा भी ऐसी रखी गई है जिस अवधि में किसान ज्यादा से ज्यादा मेहनत करने में शारीरिक रूप से सक्षम होते हैं। किसानों के लिए किसान सम्मान योजना भी खाद-बीज के लिए मददगार है। इसका लाभ भी बड़ी तादात में किसान उठा रहे हैं। हालांकि आधे-अधूरे कागजात की वजह से इस योजना में चयन के स्तर पर कुछ जगहों पर चूक भी देखी गई। उम्मीद की जानी चाहिए कि सुधार की प्रक्रिया के बाद वास्तविक लाभुकों के लिए यह लाभ सुव्यवस्थित हो जाएगा। प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना के लिए अब तक राज्य के 1.87 लाख किसान आवेदन कर चुके हैं। यह फिलहाल यूपी के अब तक के 1.84 लाख किसानों के आवेदन से ज्यादा है, लेकिन इसे और गति देने की जरूरत है। बिहार में 1.60 करोड़ किसान परिवार हैं। इनमें कुछ किसान योजना की योग्यता के बाहर होंगे, लेकिन 1.84 लाख की संख्या कम ही कही जाएगी। आवेदन की प्रक्रिया इस साल अगस्त से ही शुरू कर दी गई थी। सवाल यह है कि यह आंकड़ा हरियाणा के अब तक के 3.99 लाख आवेदन के आंकड़े को पार क्यों नहीं कर सकता। गौर करें तो बिहार के 22 जिलों में इस योजना के प्रति पर्याप्त सक्रियता नहीं दिख रही। इसे गति देने की आवश्यकता है।

असरहीन होती आलोचना

डॉ. एके वर्मा

लोकतंत्र में आलोचना जरूरी है, पर उसकी विश्वसनीयता के लिए जनप्रतिनिधियों में ज्ञान, विशेषज्ञता, अनुभव और शालीनता का होना अपरिहार्य है

अवधेश राजपूत

आलोचना लोकतंत्र की आत्मा है। यदि इस आत्मा का स्वरूप विकृत हो जाए तो लोकतंत्र भी विकृत हो जाएगा। आलोचना रचनात्मक होनी चाहिए ताकि विभिन्न संवैधानिक संस्थाओं में 'अवरोध और संतुलन' बना रहे तथा सरकार उत्तरदायी, संवेदनशील एवं पारदर्शी हो सके। लोकतंत्र में सत्तापक्ष और विपक्ष, दोनों को जनता चुनती है। केवल ज्यादा वोट पाने से सरकार को अधिकार नहीं मिलता कि वह अपनी ही पार्टी का प्रोग्राम लागू करे और विपक्ष को दरकिनार कर दे। इंग्लैंड में 'ब्रेक्जिट' का अनुभव इसका ताजा उदाहरण है। विपक्षी दलों और प्रेस पर आलोचना की प्रमुख जिम्मेदारी होती है। प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस में विचारधारा, नेतृत्व और दलीय लोकतंत्र का संकट है जिससे आंतरिक कलह बढ़ गया है। यही हाल कमोबेश अन्य दलों का भी है। मीडिया का भी एक बड़ा हिस्सा धीरे-धीरे सत्तापक्ष और विपक्ष में बंटता जा रहा है जिससे उनकी विश्वसनीयता भी सवालों के घेरे में है। इसमें संदेह नहीं कि लोकतांत्रिक आलोचना में गिरावट आई है। आलोचना की प्रकृति आरोप लगाने वाली हो गई है। ऐसा लगता है कि सरकार पर आरोप लगाना ही विपक्ष का एकमात्र उद्देश्य रह गया है। इससे दो नुकसान हुए हैं। एक, सरकार को पता नहीं चल पाता कि उसने वास्तव में क्या गलत किया और उसे कैसे बेहतर किया जा सकता था? दूसरा, जनता मान चुकी है कि विरोधी दल, राजनीतिज्ञ और मीडिया का बड़ा वर्ग रचनात्मक और सकारात्मक भूमिका छोड़ नकारात्मक और विध्वंसात्मक भूमिका में आ गए हैं। परिणामस्वरूप वाजिब आलोचनाएं भी संदेह के घेरे में आ जाती हैं। आलोचना को आरोप का स्वर देने से देश, सरकार और विपक्ष, तीनों को नुकसान हुआ है। आलोचना व्यक्तिमूलक हो गई है। सरकार की नीतियों, कार्यक्रमों और निर्णयों की आलोचना करने के बजाय नेतृत्व या व्यक्ति पर प्रहार हो रहे हैं। यह भटकाव है जो आलोचना की सार्थकता पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। ऊपर से भाषा में गंभीर गिरावट आई है। यह दिखाता है कि आलोचक बौद्धिकता से कितनी दूर हो गई है। उनके पास विचार, तथ्य या भाषाई शिष्टाचार नहीं है। राज्य विधानसभाओं में भी विरोध करने में तर्कपूर्ण अभिव्यक्ति का स्थान शक्ति-प्रदर्शन ने ले लिया है। यह सब जनता मूक और असहाय दर्शक के रूप में देखती रहती है। वह नहीं जानती कि लोकतंत्र के प्रति अपनी निष्ठा और लोकतांत्रिक आलोचना के बिगड़ते स्वरों में तालमेल कैसे बैठाया जाए?

नवंबर 2016 में विमुद्रीकरण की आलोचना करते हुए पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने उसे 'संगठित एवं कानूनी लूट' की संज्ञा दी थी और 'जीएसटी' को 'टैक्स-टेररिज्म' कहा था। राहुल गांधी ने उसी 'जीएसटी' को गब्बर सिंह टैक्स कहा जिसका संसद में स्वयं कांग्रेस पार्टी ने समर्थन किया और जिसे राज्यसभा में मनमोहन सिंह ने पास करवाने में अहम भूमिका निभाई। हाल में मनमोहन सिंह ने संरचनात्मक सुधारों पर ध्यान न देने के लिए मोदी की आलोचना की, लेकिन वह भूल गए कि अपने दस वर्षों के लंबे कार्यकाल में नरसिंह राव द्वारा स्वीकृत उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण से उत्पन्न माहौल में उन्होंने भूमि संबंधी कानूनों, श्रम-कानून और मंडी-एक्ट में वांछित सुधार नहीं किए जिससे कृषि और 'सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम' विकसित नहीं हो सके। ऐसी अतार्किक आलोचनाओं का जनता पर गहरा असर पड़ा जिससे 2019 लोकसभा चुनावों में कांग्रेस की करारी हार हुई। इस समय भी आर्थिक मंदी की चर्चा है। आलोचकों के अनुसार अगस्त 2019 में भारत का निर्यात छह प्रतिशत घट गया है, लेकिन वे यह छुपा गए कि विदेशों से आयात भी 13.45 प्रतिशत घटा है जिससे व्यापार संतुलन बेहतर हुआ। इसी प्रकार महंगाई दर चार प्रतिशत से कम होने पर भी ध्यान नहीं दिया गया। फिर भी इन आलोचनाओं के चलते मोदी सरकार ने अपने निर्णयों में नमनीयता दिखाई, चाहे वह कॉरपोरेट टैक्स में कटौती का फैसला हो या फिर इसके पहले उठाए गए अन्य कदम।

कैसे बढ़े आलोचना की विश्वसनीयता? इसके लिए राजनीतिक दलों को कम से कम तीन कदम उठाने पड़ेंगे। प्रथम, वे अपने सांसदों और विधायकों को विभिन्न विषय या मंत्रालय आवंटित कर दें और उनसे इन विषयों या मंत्रालयों के कामकाज में विशेषज्ञता हासिल करने को प्रेरित करें। इससे पार्टी में संबंधित मंत्रालयों या विषयों के विशेषज्ञ होंगे जो सरकार की तार्किक आलोचना कर सकेंगे। इससे आलोचना का स्वरूप व्यक्ति केंद्रित न हो कर नीतियों, कार्यक्रमों और निर्णयों पर केंद्रित होगा जिससे सरकार सतर्क होगी, जनता शिक्षित होगी और विपक्ष की विश्वसनीयता बढ़ेगी।

दूसरा, दलों को राजनीतिक स्पर्द्धा के साथ-साथ राजनीतिक-सौहार्द भी बढ़ाना पड़ेगा। लोकतंत्र में विरोध और आलोचना को संवैधानिक मान्यता प्राप्त है। विरोध का अर्थ शत्रुता नहीं, आलोचना का अर्थ मनमुटाव नहीं। ऐसा प्रयास करना होगा कि सदन के अंदर और बाहर विभिन्न दलों और नेताओं में पारस्परिक सौहार्द बना रहे। इसमें पहल हमेशा सत्तारूढ़ दल को ही करनी पड़ेगी। उसे यह समझना होगा कि विपक्ष भी अपने संवैधानिक दायित्वों का ही पालन कर रहा है जिसका सम्मान होना चाहिए। सरकार के विरोध का अर्थ देश का विरोध नहीं होता। विरोध के स्वरों को दरकिनार नहीं किया जाना चाहिए। सरकार गंभीर मुद्दों पर विपक्ष से सतत संवाद बनाए और शांत वातावरण में विपक्ष की बात समझे और अपना पक्ष समझाए। चूंकि लोकतंत्र में सत्ता-परिवर्तन अपरिहार्य है इसलिए आज जो दल विपक्ष में है वह कल सत्तापक्ष में होगा। जब राजनीतिक दलों में सौहार्द रहेगा तब लोकतांत्रिक व्यवस्था और उसकी संस्थाओं में भूमिका निभाना एक सुखद अनुभूति होगी।

लोकतंत्र में आलोचना जरूरी है, पर उसकी विश्वसनीयता हेतु जनप्रतिनिधियों में ज्ञान, विशेषज्ञता, अनुभव और शालीनता का होना अपरिहार्य है। इसीलिए तीसरे कदम के तहत राजनीतिक दलों को भाषाई शिष्टाचार पर भी ध्यान देना होगा। संविधान संसद और विधानसभाओं में सांसदों और विधायकों की अभिव्यक्तियों को संरक्षण देता है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि सांसद और विधायक उसका दुरुपयोग करें। भाषा में गिरावट न केवल पूरे माहौल को खराब कर देती है वरन संसदीय प्रक्रिया को भी कलंकित करती है। संसदीय कार्यवाही के सजीव प्रसारण से संसदीय अभिव्यक्तियों और व्यवहार का साक्षी पूरा देश होता है। वह जनता के लिए प्रतिमान बनता है और वे उसका अनुकरण करते हैं। वे समझते हैं कि सांसदों-विधायकों की तरह उनका भी कुछ नहीं होगा। भ्रष्ट पुलिस के कारण ऐसा होता भी है। आम नागरिक परेशान होता है, जबकि अपराधी बच निकलते हैं।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोसायटी एंड पॉलिटिक्स के निदेशक हैं)
response@jagran.com

कमजोरी का प्रतीक नहीं हैं आंसू

क्षमा शर्मा

पुरुष भी दुखी-आहत होते हैं और उनके भी आंसू निकलते हैं, इसे मानने में भला इतनी तकलीफ क्यों?

चंद्रयान-दो अभियान से जुड़े लैंडर विक्रम की चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग न हो पाने और फिर ऑर्बिटर से उसका संपर्क टूट जाने बाद इसरो प्रमुख के. सिवन भाव विह्वल हो गए और अपने आंसू रोक नहीं पाए। उसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गले लगाकर उनका हौसला बढ़ाया। इस तस्वीर के आते ही लोगों की प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आ गई। बहुत से लोगों ने कहा कि यह इन दिनों की सबसे अच्छी तस्वीर है, लेकिन बहुतों ने मजाक भी उड़ाया। वैज्ञानिक वर्षों तक जिस प्रोजेक्ट पर कड़ी मेहनत करते हैं उसमें सफल हो जाएं, यह जरूरी नहीं। इसलिए सिवन का रोना या वैज्ञानिकों का सिर पकड़कर बैठना बहुत स्वाभाविक प्रतिक्रियाएं थीं। मनुष्य के सुख-दुख, उसके आंसू, उसकी तमाम भावनाएं जैसे इस एक चित्र में प्रकट हो गई थीं। यह तस्वीर इसलिए भी अनोखी थी कि देश के प्रधानमंत्री का इस तरह से अपने ही देश के वैज्ञानिक को गले से लगाना, उसकी पीठ थपथपाना, उसे ढाढस देना और भविष्य की आशा बंधाना मानवीय अभिभावक होने की गवाही दे रही थी। सिवन ने कहा भी कि जब देश का प्रधानमंत्री आपको गले लगा रहा हो तो आपको प्रेरणा मिलती है। उन्होंने यह भी कहा कि रॉकेट साइंस में हमेशा कुछ रहस्य बने रहते हैं। वैज्ञानिक प्रयोगों में सफलता की कोई गारंटी नहीं होती, फिर भी सफलता की आशा में प्रयोग लगातार चलते रहते हैं। हर बार कोई गलती, हमेशा एक नया सबक देती है।

पता नहीं क्यों सिवन के आंसू बहुत से लोगों को रास भी नहीं आए। कुछ लोग कहने लगे कि ऐसे भी कोई रोता है। किसी ने कहा किसी मुसीबत के वक्त इस तरह से रोना बताता है कि ऐसा आदमी वैज्ञानिकों की टीम का नेतृत्व करने लायक ही नहीं। यह भी कहा गया कि दफ्तर में या काम की जगह पर रोना गैर पेशेवराना है। जाहिर है कि बहुतों को पुरुषों का रोना पसंद नहीं आता। जैसे कि पुरुष हाड़-मांस के इंसान नहीं होते, उनकी भावनाएं नहीं होतीं, उन्हें कोई दुख नहीं सालता, उन्हें जीवन में किसी चुनौती का सामना नहीं करना पड़ता। पिछले 50 वर्षों में पुरुष की ऐसी रूढ़िवादी छवि बना दी गई है कि लोग और मीडिया उसके बाहर जाकर उसे देखना ही भूल गए हैं। आखिर पुरुष होकर क्यों कोई नहीं रो सकता? इसलिए कि जिन लोगों ने उनकी क्रूर, स्वार्थी, पत्थर दिल होने की छवि बनाई है, इससे उस छवि को नुकसान पहुंचता है। जबकि सबसे अधिक पुरुष आत्महत्या करते हैं, उन्हें बड़ी संख्या में हृदय रोग और बीमारियां होती हैं। घर-गृहस्थी की चिंता में रात-दिन खटते हैं, मगर इसका कोई श्रेय शायद ही उन्हें कभी दिया जाता है। शायद इसी कारण सिवन के रोने को लोगों ने अजूबे की तरह देखा।

इस तरह की बातों में हमारा वही सदियों पुराना सोच छिपा हुआ है। जो आज भी किसी रोने वाले पुरुष को कमजोर की तरह देखता है। उनकी नजर में रोना औरतों का काम है, क्योंकि औरतें आदमियों से कमजोर होती हैं। जब आदमी रात-दिन काम करता है तो उसे उस काम की सफलता भी चाहिए। इस सोच में कुछ बुरा भी नहीं है। ऐसे में जब एकाएक कोई हादसा हो जाए और आंसू छलक पड़ें तो इन आंसुओं का मजाक उड़ाना नृशंसता को बताता है। आखिर आंसू कमजोरी का प्रतीक क्यों हों?

दुनिया में अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के बनाए यान अपना कार्यकाल पूरा करके जब अनंत की यात्रा पर निकल पड़ते हैं तो भी उनका निर्माण करने वाले वैज्ञानिक फूट-फूटकर रोने लगते हैं। यह बिछड़ना ऐसा ही होता है जैसे अपने बच्चे से बिछड़ना। जिसका निर्माण किया, वर्षों तक अंतरिक्ष में पाला-पोसा और जब बिछड़ने का वक्त आया तो आंसू निकल पड़े। इसमें हंसने जैसा क्या है? या फिर आज के दौर में भी पुरुष की वही छवि चाहिए कि मर्द को दर्द नहीं होता। पुरुष भी दुखी-आहत होते हैं और उनके भी आंसू निकलते हैं, इसे मानने में भला इतनी तकलीफ क्यों? एक वैज्ञानिक सिर्फ वैज्ञानिक नहीं होता है, बल्कि वह एक इंसान भी होता है। सिवन के इस तरह से अफसोस प्रकट करने से यह भी पता चला कि वह चंद्रयान-दो अभियान से भावनात्मक रूप से भी कितने गहरे जुड़े थे। सच तो यह है कि जब तक किसी अभियान से आप भावनात्मक रूप से नहीं जुड़े होते, उसे कभी पूरा नहीं कर सकते। जब अमिताभ बच्चन किसी बात से दुखी होकर पर्दे पर आंसू बहाते हैं तब तो हम खूब तालियां बजाते हैं, मगर जीवन में हमें आंसू नहीं चाहिए।

(लेखिका वरिष्ठ साहित्यकार हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

सकारात्मक नजरिया

मनुष्य के जीवन में सकारात्मक नजरिये का बहुत महत्व है। जिंदगी के शुरुआती दौर से लेकर अंत तक हम किसी न किसी प्रकार से संघर्ष के दौर से गुजर रहे होते हैं। ऐसे में हमारे अंतर्मन में तमाम प्रकार के नकारात्मक विचार भी प्रबलता से अपना स्थान बनाते जाते हैं जो कुछ समय अपना एक स्थायी पैठ बना लेते हैं। ये हमारे जीवन में हर मोड़ पर बाधा बनकर खड़े हो जाते हैं। जीवन के प्रत्येक मोड़ पर मुश्किल हालातों का सामना यदि हम अपनी नकारात्मक सोच और नजरिये को हटा कर करें तो हमारी सफलता दर काफी हद तक बढ़ जाएगी। एक निराशावादी व्यक्ति को हर अवसर में कठिनाई दिखती है वहीं एक आशावादी व्यक्ति को हर कठिनाई में अवसर दिखता है।

सकारात्मक सोच ही सफलता की बुनियाद होती है, क्योंकि इस पर आगे मनुष्य के अंदर संघर्ष, धैर्य और प्रेरणा जैसे गुण विकसित होते हैं जो संकल्प के भाव को जगाते हैं। सकारात्मक दृष्टि मनुष्य के अंदर आशा को जन्म देती है जिससे वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने अंदर छुपी प्रतिभा को उकेरता है। नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति दूसरों में हमेशा कमियों को खोजते रहते हैं जो व्यक्ति के अंदर हीनभावना को जन्म देती है। हीनभावना से ग्रसित व्यक्ति कभी भी अपने लक्ष्य को हासिल नहीं कर पाता। वह इस सच्चाई को नहीं समझ पाता कि नकारात्मक सोच ही असफलता का मूल कारक है। वहीं सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति अपनी कमियों को दूर कर सकारात्मक मन से लक्ष्य के प्रति आगे बढ़ता है। इसका एक कारण यह भी है कि ऐसे लोगों में आत्मविश्वास भरा होता है जो वास्तव में सबसे बड़ी प्रेरणा है। सकारात्मक नजरिये का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे मनुष्य के अंदर मुश्किलों से लड़ने की क्षमता विकसित हो जाती है, उनके अंदर भाईचारे, सामाजिक सहयोग और समन्वय के गुण आ जाते हैं। इस प्रकार यह तनाव, कड़वाहट और बिना लक्ष्य के जिंदगी जीने जैसी कमियों को दूर कर एक अच्छी शख्सियत के निर्माण में सहयोग करता है।

शिवांशु राय

तथ्य-कथ्य | वैश्विक तेल उत्पादन में हिस्सेदारी

(2018 के आंकड़े फीसद में)

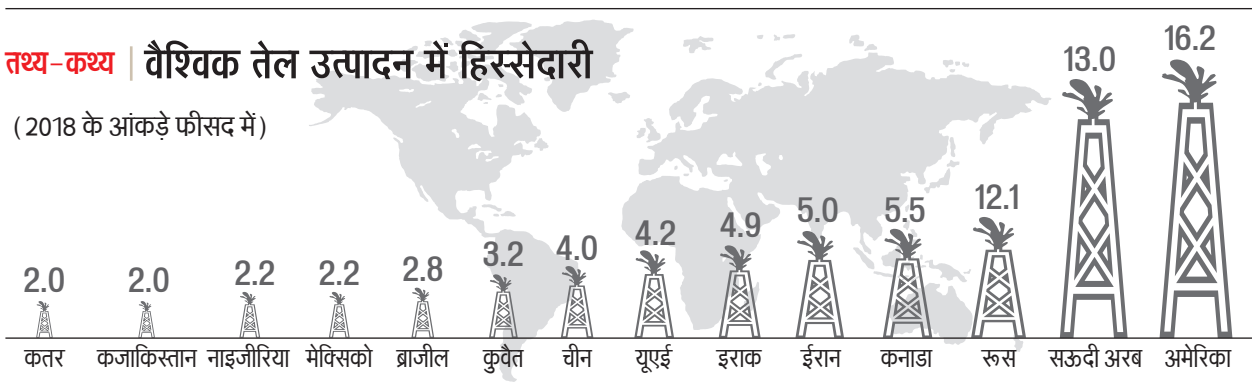

महिला से अलग पुरुष की अभिव्यक्ति

फिर से

पुरुष स्वयं को कम ही अभिव्यक्त करते हैं, जिससे उनके दर्द क्या हैं, उनकी सोच क्या है, उनकी चाहत क्या है, पता नहीं चल पाता है!

मेरा मन करता है कि मैं दुनिया को पुरुषों की नजर से देखूं, लेकिन देख नहीं पाती हूं! क्यों नहीं देख पाती, क्योंकि मेरे पास पुरुष की सोच नहीं है और ना ही पुरुष की सोच क्या है, यह किसा किताब से अनुभव मिला है! पुरुष स्वयं को कम ही अभिव्यक्त करते हैं, जिससे उनके दर्द क्या हैं, उनकी सोच क्या है, उनकी चाहत क्या है, पता नहीं चल पाता है! उनकी बातें दुनिया-जहां पर होती हैं, लेकिन कभी खुद के बारे में नहीं होती हैं! वे महिला का दर्द खूब उकेर लेते हैं, लेकिन पुरुष का असली दर्द कभी नहीं उकेरते। बस अपने हाथ पर लिख देते हैं कि मर्द को दर्द नहीं होता।

यदि मर्द को दर्द नहीं होता तो दुनिया में इतना दर्द किसका है! कोई भी पुरुष जब किसी को दर्द देता है तो उससे पहले वह दर्द लेता है। उसके सीने में दर्द पैदा होता है और उस दर्द को पाटने के लिए दूसरों को दर्द देता है। मैं वही जानना चाहती हूं कि आखिर यह दर्द क्या है? आखिर वह दर्द क्या है जो एलेक्जेंडर को सुदूर मेसिडोनिया से लेकर आता है? क्या सत्ता पाना उसका सबसे बड़ा दर्द है? क्या पुरुष का दर्द यौन पिपासा है? वह कौन सा दर्द है जो पुरुष को मृत्यु के बाद भी जन्नत की कल्पना में हूरों की चाहत पैदा करता है!

मैंने कभी किसी पुरुष को नहीं पढ़ा जिसने लिखा हो कि हम तड़प रहे हैं, हम पीड़ित हैं। बस पढ़ा है तो महिला की पीड़ा को शब्द देते पुरुषों को पढ़ा है, मानो वे कह रहे हों कि हम पीड़ा रहित हैं, लेकिन बेचारी महिला पीड़ा से मरी जा रही है। मैं घर के पुरुषों को देखती हूं, अपने मन को कभी अभिव्यक्त नहीं करते। बाहर की दुनिया के पुरुषों को भी खूब देखा है, लेकिन वे भी खुद को अभिव्यक्त नहीं करते। वे समाज के चिकित्सक बने घूमते हैं, लेकिन समाज के प्रमुख अंग पुरुष का ही निदान नहीं करते तो समाज को क्या खाक ठीक करेंगे!

दुनिया में मनोरोग बढ़ते जा रहे हैं! स्मृति-भ्रंश भी प्रमुख समस्या बन गई है। आखिर क्यों बढ़ रहे हैं ये रोग! हम खुद को अभिव्यक्त नहीं कर पा रहे हैं। हमने अपनी दुनिया अलग बसा ली है। पुरुष सामाजिक प्राणी है, लेकिन वह धीरे-धीरे समाज से कट रहा है, परिवार से भी कटने लगा है और परिवार में भी अक्सर दिखता है कि पुरुषों की दुनिया अलग ही बन गई है। न जाने कितने घर हैं जहां शाम ढलते ही पुरुष अकेला या दोस्तों के साथ बैठ जाता है या फिर अकेले ही सैर को चल देता है। कभी पुस्तकालय में भी अकेले बैठे मिल जाते हैं, लेकिन उम्र के पड़ाव में बहुत ही कम लोग हैं जो परिवार के साथ गप्पे मारते दिखते हैं।

पुरुष शायद सोचता है कि यदि मैंने अपना दर्द बता दिया तो मेरा मूल्यांकन कम हो जाएगा। मैं एक सामान्य आदमी बनकर रह जाऊंगा। अब मैं तो इस बारे में लिख नहीं सकती, बस महिला की नजर से जो समझ पड़ता है उसे लिख रही हूं। हो सकता है कि पुरुष का नजरिया कुछ और हो! लेकिन जब तक वे महिला को अभिव्यक्त करने के स्थान पर पुरुष को यानी खुद को अभिव्यक्त करना नहीं शुरू करेंगे तब तक समाज का वास्तविक स्वरूप निकलकर बाहर नहीं आएगा।

(अजित गुप्ता का कोना ब्लॉग से साभार)

मेलबाक्स

राजनीति में भी हो रिटायर होने का प्रावधान

राजनीति से रिटायर होने से इन्कार शीर्षक लेख के तहत प्रदीप सिंह ने देश की राजनीति में नए चेहरों को आगे आने का मौका देने के लिए पुराने राजनेताओं को नसीहयत दी कि वे खुद ही राजनीति से सन्यास ले लें। अक्सर हम सब देखते हैं कि जब किसी क्रिकेट खिलाड़ी को यह एहसास होने लगता है कि वह खेल में शायद अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाएगा तो वह संन्यास लेने का मन बना लेता है। लेकिन हमारे देश की राजनीति में बहुत से ऐसे नेता हैं जो उम्रदराज होने पर भी राजनीति से रिटायर नहीं होना चाहते, लेकिन भाजपा के दो मुख्य दिग्गज अरुण जेटली और सुषमा स्वराज ने अपने खराब स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए मोदी सरकार से बाहर रहने का मन बनाकर मिशाल पेश की थी। उन्हें किसी मंत्री पद का लालच नहीं था। अगर कांग्रेस की बात की जाए तो सोनिया गांधी ने फिर से कांग्रेस की बागडोर खुद संभाल कर यह बता दिया कि कांग्रेस या तो परिवारवाद से मुक्त नहीं होना चाहती या फिर इसको गांधी परिवार के अलावा किसी अन्य अपने व्यक्ति पर भरोसा नहीं है। कांग्रेस को इस पर गौर जरूर करना चाहिए कि पार्टी कि गिरती साख के लिए कहीं इसका परिवारवाद का मोह तो जिम्मेदार नहीं है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, लेकिन अफसोस इस बात का है कि कुछ स्वार्थी लोगों ने देश की राजनीति में आकर लोकतंत्र की जड़ों को कमजोर कर दिया। देश की राजनीति में तो ऐसे चेहरे भी हैं जो न जाने कितने वर्षों से राजनीति में डेरा डाले बैठे हैं, इनमें से कुछ भ्रष्टाचार के आरोपी और दागी भी हैं। चुनाव आयोग को चाहिए कि यह लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करने और आमजन का विश्वास राजनीति में बढ़ाने के लिए कुछ ठोस और उचित कदम उठाए, जैसे चुनाव लड़ने के लिए उम्मीदवार की शैक्षिक योग्यता, उम्र निर्धारित की जाए, शैक्षिक योग्यता कम से कम बारहवीं से ऊपर और उम्र 60-65 से कम, ताकि देश की राजनीति में नए चेहरे आ सकें।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

हिंदी का राजनीतिक विरोध

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के हिंदी को लेकर दिए बयान का विरोध गलत है। उन्होंने किसी भी गैर हिंदी भाषी राज्य के लोगों पर हिंदी थोपने की बात नहीं कही है, बल्कि हिंदी को दूसरी भाषा के रूप में अपनाने की बात कही है। इसमें कुछ भी गलत नहीं है। दुनिया का कोई ऐसा देश नहीं है, जहां कई भाषाएं न बोली जाती हों। लेकिन हर देश की एक भाषा होती है, जिसके नाम से उस देश की वैश्विक पहचान बनती है। ब्रिटेन में भी कई भाषाएं हैं, लेकिन वहां की मान्य भाषा अंग्रेजी है। भारत में ऐसा नहीं है। जबकि देश की आजादी के समय सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा के रूप में हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने का विचार था। वैश्विक स्तर पर देश की पहचान एक भाषा से होती है। इसमें कोई बुराई नहीं है। भारत में आज हिंदी को लेकर कुल 22 राज भाषाएं हैं, लेकिन किसी को राष्ट्र भाषा का दर्जा प्राप्त नहीं है। हिंदी को केवल हिंदी भाषी राज्यों में ही नहीं, अपितु दक्षिण के राज्यों में भी बोलने व समझने वाले कम नहीं हैं। हिंदी को राष्ट्र भाषा बना देने से देश की अन्य भाषाओं को कोई नुकसान भी नहीं है। उनके बोलने-समझने वाले उसी तरह अपनी भाषा में काम करते रहेंगे। उन्हें हिंदी पढ़ने की भी कोई बाध्यता नहीं होगी। हिंदी के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं का भी विकास चलता रहेगा। केवल राजनीति के लिए विरोध करना उपयुक्त नहीं है। इससे किसी का भला होने वाला नहीं है। जो नेता हिंदी का विरोध कर रहे हैं उन्हें हिंदी का विरोध करने के बजाय अपनी भाषा के विकास के लिए सरकार को सुझाव देने चाहिए, जिससे हिंदी के साथ अन्य भारतीय भाषाओं के विकास के लिए सरकार कुछ कदम उठा सके।

rumasingh12345@gmail.com

अयोध्या का विवाद

अयोध्या राम जन्मभूमि एवं बाबरी मस्जिद विवाद लंबे अर्से से चला आ रहा है। अब इसके समाधान की उम्मीद बंधी है। सुप्रीम कोर्ट हर पक्ष को सुन एवं साक्ष्य भी देख रहा है। इसके बाद जो फैसला आता है, उसे दोनों ही पक्ष को स्वीकार करना चाहिए। सामाजिक सौहार्द के लिए भी इस विवाद का हल जरूरी है।

hemahariupadhyay@gmail.com

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।